कस्बा किठौर ''इतिहास के दर्पण में''

श्रीमती नाजमीन
असिस्टेंट प्रोफेसर
(इतिहास विभाग)
राजकीय महाविद्यालय,
बी0बी0 नगर, बुलंदशहर, उ0प्र0
ईमेलः nazmeenrais 151@gmail.com

प्रो (डॉ) ज़ीनत जैदी
प्राचार्य
(इतिहास विभाग)
राजकीय महाविद्यालय,
बी0बी0 नगर, बुलंदशहर, उ0प्र0

सारांश

कस्बा किठौर वर्तमान में नगर पंचायत किठौर के रूप में विद्यमान है। जोकि जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश का एक सुप्रसिद्ध नगर है। किठौर नगर पंचायत को 15 वार्डों में विभाजित किया गया है। भारत की जनसंख्या 2011 द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार किठौर नगर पंचायत की जनसंख्या 27933 है। जिसमें कुल जनसंख्या का 87.79 प्रतिशत मुस्लिम, 12.1 एक प्रतिशत हिंदू, 0. 05 प्रतिशत ईसाई और 0.01 प्रतिशत बौद्ध मतानुयायी निवास करते हैं। यहां निवास करने वाली अनुसूचित जाति की आबादी कुल जनसंख्या का 3.87% है। किठौर शहर की साक्षरता दर राज्य के औसत 67.68 प्रतिशत से 61.11 प्रतिशत कम है। किठौर में पुरुष साक्षरता दर लगभग 69.85% जबकि महिला साक्षरता दर 51.71% है। यहां महिला लिंगानुपात राज्य के औसत 912 के मुकाबले 928 है। इसके अलावा किठौर नगर पंचायत में बाल लिंगानुपात उत्तर प्रदेश राज्य के औसत 902 की तुलना में लगभग 925 है।

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 10-03-26
Approved: 23-03-26

श्रीमती नाजमीन
प्रो (डॉ) ज़ीनत जैदी

कस्बा किठौर ''इतिहास के दर्पण में''

RJPP Oct.25-Mar.26,
Vol. XXIV, No. I,
Article No. 18
Pg. 172-176

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-mar-2026-vol-xxiv-no1--270

https://doi.org/10.31995/rjpp.2026.v24i01.018

कस्बा किठौर का इतिहास इतना ही पुराना है जितना हस्तिनापुर, मेरठ और इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) का इतिहास है। ऐतिहासिक दृष्टि से जब हम किठौर के इतिहास की खोज में प्राचीन काल में जाते हैं तो किठौर का इतिहास हमें महाभारत काल से भी पहले के समय से जुड़ा मिलता है, क्योंकि आज वर्तमान रूप में किठौर में जिस स्थान पर स्थित है यह बस्ती महाभारत काल से पूर्व यहां स्थित नहीं थी, बल्कि वर्तमान किठौर के दक्षिण में एक हजारों वर्ष पुरानी बस्ती के अवशेष प्राप्त होते हैं। जहां अब कोई नगर या बस्ती ना होकर इस क्षेत्र को ''जाफरपुर नंगला का जंगल'' कहां जाता है। जब इस नगर का अस्तित्व लुफ्त हो गया, तब वर्तमान किठौर के पश्चिम में हमें एक अन्य प्राचीन नगर के अवशेष हैं, जो वर्तमान किठौर और एवं ग्राम बहरोड के बीच स्थित था। इस स्थान पर भी आज घना जंगल मौजूद है जिसको ''शहर का जंगल'' नाम से संबोधित किया जाता है।

रामायण काल में किठौर

जैसा कि रामायण तथा अन्य हिंदू धार्मिक ग्रंथों के विवरणों से सिद्ध होता है कि वर्तमान मेरठ का रामायण कालीन प्राचीन नाम ''मयराष्ट्र'' था जिसको उस काल के एक राक्षस राजा ''मयदंत'' ने निर्मित किया था। वह अपने समय का बहुत बड़ा वास्तु शिल्पी था। इतिहास में यह घटना बहुत महत्व रखती हैं कि इसी राजा मयदंत की एक पुत्री ''मंदौद्री'' थी। जिसका विवाह ऋषि विश्वा के पुत्र लंका अधिपति रावण के साथ हुआ था। उस काल में किठौर का यह क्षेत्र मेरठ के अति निकट होने के कारण राक्षस राजा मयदंत के अधीन था तथा राजा की पुत्री का विचरण क्षेत्र था।

महाभारत काल में किठौर

वेदव्यास कृत ग्रंथ महाभारत से ज्ञात होता है कि हस्तिनापुर गौरव एवं पांडवों की राजधानी थी इस प्रकार हस्तिनापुर को तत्कालीन भारतवर्ष की राजधानी होने का गौरव प्राप्त था। ऐतिहासिक ग्रंथों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जब हस्तिनापुर को गंगा की भीषण बाढ़ का सामना करना पड़ा तब पांडवों ने वैकल्पिक रूप से दो उपनगरों की स्थापना की। जिनमें प्रथम इंद्रप्रस्थ था जिसको हम आज दिल्ली के नाम से जानते हैं तथा दूसरा किठौर था जो वर्तमान में नगर पंचायत किठौर के रूप में हमारे सम्मुख विद्यमान है। क्योंकि किठौर का यह क्षेत्र हस्तिनापुर के अति निकट था और सभी प्रकार से सुरक्षित था इस कारण से पांडवों ने इस स्थान पर विशाल एक कृत्रिम टीला बनाकर उस पर एक विशाल दुर्ग का निर्माण किया और इस प्रकार से पांडवों की हस्तिनापुर स्थित राजधानी किठौर में स्थानांतरित हो गई इसके अवशेष वर्तमान काल में भी किठौर के सबसे ऊंचे स्थान के रूप में मौजूद हैं।

किठौर में श्री कृष्ण जी का आगमन एवम निवास

महाभारत काल में पांडवों द्वारा निर्मित दुर्ग जो कि वर्तमान किठौर में मोहल्ला ऊंचा कुआं के रुक में आज भी स्थित है। यह स्थान सामरिक दृष्टि से कौरव और पांडवों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस किले के पश्चिम की और वर्तमान मोहल्ला मौसम खानी के निकट एक बहुत भव्य अतिथिगृह भी बनाया गया था। जिसमें कौरव एवं पांडवों के बीच आयोजित होने वाला प्रसिद्ध राजसूय यज्ञ इसी अतिथिगृह के भवन में आयोजित किया गया था। जिसका विवरण महाभारत ग्रंथ से प्राप्त होता है। उल्लेखनीय है कि जब श्री कृष्ण जी कौरव तथा पांडवों के बीच चल रहे विवाद का फैसला

कराने के लिए यहां आए तब, वे मथुरा से चलकर कोल (अलीगढ़), बरन (बुलंदशहर), स्याना तथा गढ़मुक्तेश्वर होते हुए किठौर पहुंचे थे। कृष्ण जी को किठौर स्थित उपरोक्त वर्णित भव्य अतिथि गृह में ठहराया गया था। इस प्रकार उन्होंने कुछ समय के लिए यहां निवास ग्रहण किया तथा कौरव पांडवों के मध्य चल रहे विवाद को समाप्त करने का प्रयास किया।

जब महाभारत काल का पतन हो गया तब हस्तिनापुर की भांति किठौर का कौरवों पांडवों द्वारा निर्मित दुर्ग भी वीरान हो गया और उसके आसपास आबादियां बसनी शुरू हुई तथा इस आबादी रूपी नगर को श्री कृष्ण जी के यहां ठहरने की घटना के कारण ''कृष्ण ठौर'' के नाम से जाना जाने लगा जो कालांतर में परिवर्तित होकर किठौर के नाम से प्रचलित हो गया और वर्तमान में भी यह इसी नाम से प्रसिद्ध है।

राजपूत काल में किठौर

राजपूत शासनकाल में किठौर दिल्ली के निकट होने के कारण तंवर या तोमर वंश के अधीन था। तारीख ए फरिश्ता नमक ऐतिहासिक ग्रंथ के विवरण से ज्ञान होता है कि पृथ्वीराज चौहान उर्फ राय पिथौरा के एक भाई खंडेराव की ससुराल किठौर तथा मेरठ के मध्य किसी गांव में थी। जब सन 1192 ईस्वी में मोहम्मद गौरी ने दिल्ली पर आक्रमण किया और पृथ्वीराज चौहान का शासन समाप्त हो गया तब दिल्ली के साथ मेरठ तथा किठौर का क्षेत्र भी दिल्ली सल्तनत के अधीन हो गया। ऐतिहासिक स्त्रोतों से ज्ञान होता है कि सुल्तान मोहम्मद गौरी के सिपहसालार कुतुबुद्दीन ऐबक ने गौरी के आदेश पर सन् 1192 ई में मेरठ के किले पर आक्रमण किया था। यह किला उसे समय डोर वंश के एक राजपूत राजा हरदत्त के अधीन था। विदित हो कि जब कुतुबुद्दीन ऐबक ने मेरठ के किले पर आक्रमण किया। उसे आक्रमण में यहां की बहुत सी हिंदू जातियों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया जिनमें प्रमुख रूप से किठौर तथा आसपास के गांव में बसने वाली जाति मुस्लिम त्यागी (महेसरे) प्रमुख रूप से मौजूद हैं।

मुगल काल में किठौर

भारत में मुगलों का शासन स्थापित होने के उपरांत जब सम्राट अकबर ने राजा टोडरमल एवं शाह मंसूर के नेतृत्व में राजस्व विभाग की स्थापना की और भूमि की पैमाइश की गई तब मेरठ को भी एक प्रथक जिले का रूप दिया गया और उस जिले में कई परगने बनाए गए। जिनमें से कस्बा सरावा को भी एक परगना बनाया गया और किठौर को सरावा परगना के अधीन एक प्रथक राजस्व ग्राम का रूप दे दिया गया।

सन 1748–54 इसी के मध्य किठौर के समीप के नगर किला परीक्षितगढ़ पर एक गुर्जर राजा नैनासिंह ने अपना शासन स्थापित किया तब यह किठौर भी उसके अधीन हो गया।

ब्रिटिश काल में किठौर

मुगलों के पतन के पश्चात दिल्ली तथा मेरठ पर ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन स्थापित हो गया और इस प्रकार किठौर सहित मेरठ का संपूर्ण जिला ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया। जब सन् 1857 ईस्वी में 10 मई को मेरठ से अंग्रेजों के खिलाफ बगावत शुरू हुई तब किठौर से भी बहुत से लोग उस विद्रोह में शामिल होने के लिए मेरठ पहुंचे और वहां से लाल किला दिल्ली तक गए।

स्वाधीनता आंदोलन में किठौर की सहभागिता

स्वतंत्रता संघर्ष के समय देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए चल रहे आंदोलन में किठौर के कई महान व्यक्तियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और सक्रिय रूप से योगदान किया। जिनमें विशेष रूप से पंडित हर स्वरूप पटराय जी, 'हकीम सैयद इसहाक अली' हकीम सैयद शफीक अहमद किठौरवी, एवं मौलाना बशीर अहमद भट्टा का नाम विशेष एवं अति महत्वपूर्ण रूप से उल्लेखनीय है।

किठौर के विशिष्ट राजनैतिक व्यक्तित्व

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात किठौर में के ऐसे राजनीतिक व्यक्तित्व का उदय हुआ जिन्होंने राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तर की राजनीति में सक्रिय भूमिका अभिनीत की एवं किठौर का नाम रोशन किया जिनमें मुख्य रूप से निम्न व्यक्ति उल्लेखनीय है श्री अब्दुल हलीम जो उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री नियुक्त किए गए। स्वर्गीय श्री मंजूर अहमद जो किठौर तथा गढ़ विधानसभाओं से कई बार विधायक के रूप में निर्वाचित हुए।

वर्तमान में किठौर के राजनीतिक व्यक्तियों में निम्न नाम उल्लेखनीय है श्री बाबू मुनकाद अली ये बहुजन समाजवादी पार्टी के उच्च पदों पर रहे हैं तथा दो बार भारत की संसद के उच्च सदन राज्यसभा के सदस्य रह चुके हैं। श्री शाहिद मंजूर यह स्वर्गीय श्री मंजूर अहमद के पुत्र है जो समाजवादी पार्टी से चौथी बार विधायक के रूप में निर्वाचित है तथा उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री रह चुके हैं तथा कस्बे का नाम रोशन किया है।

किठौर के अन्य विशिष्ट व्यक्ति

कस्बा किठौर में चिर समय से ही अन्य क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति मौजूद रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गांधी मेमोरियल इंटर कॉलेज के संस्थापक ''किठौर के सर सैयद अहमद खां'' के नाम से विख्यात स्वर्गीय श्री युसूफ भाई जान का योगदान उल्लेखनीय है।

उर्दू साहित्य के क्षेत्र में मशहूर शेयर मुंशी अलैहदाद खां का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है जो की मिर्जा गालिब के समकालीन थे इनके अतिरिक्त हकीम सैयद खुर्शीद अली, श्री अब्दुल जब्बार, श्री असरार उल हक असरार आदि का नाम मुख्य रूप से उल्लेखनीय है।

इतिहास के क्षेत्र में डॉ० नोफिलरूमानी का नाम उल्लेखनीय है जो वर्तमान में क्षेत्रीय इतिहास के अन्वेषण एवं लेखन में विशेष कार्य कर रहे हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कस्बा किठौर ऐतिहासिक रूप से अत्यधिक समृद्ध है। इसकी प्राचीनता महाभारत काल से भी पूर्व की है। नगर पंचायत किठौर सहस्त्रों वर्ष पूर्व के इतिहास को अपने में समेटे हुए है। किठौर की धरती का रामायण काल के राजा मयदंत से लेकर महाभारत काल के कौरव पांडव तथा श्री कृष्णा जी, राजपूत काल कई शासको, सल्तनत कालीन शासक, मुगल काल तथा ब्रिटिश काल के कई शासको का किसी न किसी रूप में संबंध रहा है। उपरोक्त सभी किठौर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समृद्ध बनाते हैं। विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में किठौर वासी अपनी अहम भूमिका दर्ज करते रहे हैं।

साक्षात्कार

1. सैय्यद मुख्तार अहमद पुत्र श्री हकीम सैयद शफीक अहमद
2. मोहम्मद नोमान अली पौत्र श्री हकीम सैयद इसहाक अली भूरे खां पुत्र श्री कमालू खां
3. श्री जानू अहमद पुत्र श्री जमाल अहमद
4. शाहनवाज खां पुत्र श्री इशारत खां
5. जाने आलम पुत्र श्री माहे आलम
6. अब्दुल मजीद पुत्र श्री अब्दुल वाहिद खां
7. मोहम्मद गुलाम जिलानी पुत्र श्री मुजफ्फर खान
8. मोहम्मद नोमान अली पौत्र श्री हकीम सैयद इसहाक अली
9. भूरे खां पुत्र श्री कमालू खां
10. श्री जानू अहमद पुत्र श्री जमाल अहमद
11. डॉ० यासमीन पुत्री इशारत खान
12. श्रीमती रोशन जहां पुत्री श्री महबूब अली

संदर्भ

1. आचार्य दीपंकर स्वतंत्रता आंदोलन और मेरठ
2. मौलाना हुसैन अहमद मदनी नक्श ए हयात (उर्दू में)
3. मोहम्मद कासिम फरिश्ता तारीख–ए–फरिश्ता
4. वेदव्यास महाभारत
5. मेरठ डिस्ट्रिक्ट गैजेटियर 1908 ईस्वी
6. हजरत निजामुद्दीन ओलिया फवाइद उल फवाद (फारसी में)